DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
मो० - 9415376545

B.A Part-II, Paper-IV (Comparative Government and Politics)

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No.................. Lecture No - 24 Date 25/08/20

प्रजातंत्र में राजनीतिक दलों की भूमिका -

लोकतंत्रीय शासन व्यवस्था में राजनीतिक दलों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जिसका उल्लेख निम्नलिखित बिन्दुओं के तहत किया जा सकता है -

1- लोकमत का निर्माण - वर्तमान समय में राज्य संबंधी विषय बहुत अधिक जटिल और व्यापक होते है और साधारण व्यक्ति के लिए इस प्रकार के विचार विषय का चुनाव और समझ सकना संभव नहीं होता है। ऐसी स्थिति में राजनीतिक दल सार्वजनिक समस्याओं को जनता के सम्मुख इस रूप में प्रस्तुत करते है कि साधारण जनता उन्हे सके। जब विविध राजनीतिक दल समस्याओं के सम्बन्ध में अपने दृष्टिकोण का प्रतिपादन करते है, तो साधारण जनता इन समस्याओं को भली प्रकार समझ कर निर्णय कर सकती है और लोकमत का निर्माण हो सकता है।

2- चुनावों का संचालन - जब मताधिकार बहुत अधिक सीमित था और निर्वाचकों की संख्या कम थी, तब स्वतंत्र रूप से चुनाव लड़े जा सकते थे। लेकिन अब व्यस्क मताधिकार के प्रचलन के कारण स्वतंत्र रूप से चुनाव लड़ना लगभग असम्भव हो गया है। ऐसी स्थिति में राजनीतिक दल अपने दल की ओर से उम्मीदवारों को खड़ा करते है और उनके पक्ष में प्रचार करते है। चुनाव के समय होने वाली भारी खर्च भी इन - राजनीतिक दलों द्वारा ही किया जाता है। यदि राजनीतिक दल न हो तो आज के विशाल लोकतंत्रात्मक राज्यों में निर्वाचन का संचालन लगभग असम्भव ही हो जाय।

3- सरकार का निर्माण - निर्वाचन के बाद राजनीतिक दलों के द्वारा ही सरकार का निर्माण किया जाता है। अध्यक्षात्मक शासन व्यवस्था राष्ट्रपति अपने विचारों से सहमत व्यक्तियों की मंत्रिपरिषद का निर्माण कर शासन का संचालन करता है। संसदात्मक शासन में जिस राजनीतिक दल को व्यवस्थापिका में बहुमत प्राप्त हो

P.T.O

Scanned with CamScanner

उसके प्रधान द्वारा मंत्रिपरिषद का निर्माण करते हुए शासन का संचालन किया जाता है। मंत्रिपरिषद व्यवस्थापिका में अपने राजनीतिक दल के समर्थन के आधार पर ही शासन कर सकती है। दोनों प्रकार संसदात्मक एवं अध्यक्षात्मक दोनों ही प्रकार की शासन व्यवस्थाओं में सरकार का निर्माण और शासन व्यवस्था का संचालन, राजनीतिक दलों के आधार पर ही किया जा सकता है। राजनीतिक दलों अभाव में तो व्यवस्थापिका के सदस्यों द्वारा अपनी-अपनी ढपली अपना-अपना राग का स्वर अलापा जा सकता है, जिसके कारण शासन सम्भव ही नहीं होगा।

4. शासन सत्ता को मर्यादित करना — शासन व्यवस्था में बहुसंख्यक राजनीतिक दल के साथ-ही साथ अल्पसंख्यक राजनीतिक दल या विरोधी दल की बहुत अधिक महत्व रखते है। यदि बहुसंख्यक राजनीतिक दल शासन सत्ता के संचालन का कार्य करता है, तो अल्पसंख्यक दल विरोधी दल के रूप में कार्य करते हुए शासन शक्ति को सीमित रखने के लिए प्रयत्नशील रहते है। संगठित विरोधी दल के अभाव में शासक दल अधिनायकवादी रूप अपना सकता है।

5- सरकार के विभिन्न विभागों में समन्वय और सामंजस्य — सरकार द्वारा उसी समय ठीक प्रकार से कार्य किया जा सकता है जबकि शासन के विविध अंग परस्पर सहयोग करें और यह सहयोग राजनीतिक दलों द्वारा ही संभव होता है।

6- राजनीतिक चेतना का प्रसार — राजनीतिक दल नागरिक चेतना और राजनीतिक शिक्षा के अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन के रूप में कार्य करते है। सार्वजनिक समस्याओं के सम्बन्ध में किए गए निरन्तर प्रचार और वाद विवाद के आधार पर ये सामान्य जनता में सार्वजनिक क्षेत्र के प्रति रुचि जाग्रत करते है। उनका उद्देश्य अपनी लोकप्रियता बढ़ाकर शासन शक्ति पर अधिकार करना होता है।

(समाप्त)

Scanned with CamScanner